शोध मंथन, Vol. –VIII, No. 1, 2017 ISSN: (P): 0976-5255, (e): 2454-339X
ICRJIFR
IMPACT FACTOR
3.8942

शोध मंथन

वैश्वीकरण एवं इसकी विशेषताए

पवन कुमार शर्मा
शोध छात्र
जीवा जी विश्वविद्यालय

सार - संक्षेप

दैनिक जीवन में उपयोग होने वाली सामग्रियों उपकरणों आदि पर हमारा ध्यानाकर्षण स्वाभाविक ही है |इन पर दृष्टिपात करने पर यह जानने की इच्छा प्रबल हो जाती है कि अमुक वस्त, उपकरण या विचार का जन्म कब कहाँ कैसे हुआ था और ये हमारे जीवन का हिस्सा कैसे बन गये | ऐसी चीजे है टेलीविजन,रेफ्रिजरेटर,बाईक,नायलान फाईबर के उपकरण आदि- आदि |इनकी उत्पत्ति एवं विकास कहानी हमें चौकाती है किन्तु यह सर्वविदित है कि हमारी दिनचर्या में शामिल वस्तुएं,उपकरण आदि का हमारे जीवन का हिस्सा होना और कुछ न होकर वैश्वीकरण उदाहरण मात्र है | परिभाषा विशेषता के आधार पर भले ही नहीं लेकिन व्यवहारिक रूप में हम सभी वैश्वीकरण से परिचित है |

विश्व के किसी भू- भाग में फलने –फूलने वाली वास्तु खोज या बौद्धिक सांस्कृतिक उत्पाद का पूरे विश्व में आत्मसात कर लिया जाना ही वैश्वीकरण है |यह "सा विद्याया विमुक्तये" जैसी प्रक्रिया है जो "वसुधैव कुटुम्बकम" के आदर्शो का पालन करती है | सूचना एवं संचार के साधनों द्वारा यह गतिशीलता प्राप्त करती है |जिसने व्यपार, वित्त एवं श्रम का अन्तर्राष्ट्रीयकरण कर दिया है | प्रवासन ने नृजातीय पहचान के साथ –साथ सांस्कृतिक समंगीकरण एवं संकरीकरण को बल दिया है | आज राष्ट्र- राज्य की भाषा, धर्म, प्रजाति आदि सभी विभाज्यकारी बिन्दुओं को पीछे छोड़ जीवमात्र के कल्याण के निमित्त जो प्रयास दृष्टिगोचर है वह वैश्वीकरण की ही देन है मुद्दों एवं समस्याओं का भी अंतर्राष्ट्रीयकरण होने का प्रमाण पृथ्वी सम्मलेन के रूप में दृष्टिगत है |

समय बीतने के साथ ही समाज में नवीन विचारों, संस्थाओं, कलाओं, अविष्कारों आदि के उद्भव का प्रभाव जहां पड़ता है तो वही कुछ के लोप, या सम्मिलन की भी घटना दृष्टिगोचर होती है। समकालीन विश्व में हमारे जीवन का शायद ही कोई पक्ष होगा जो वैश्वीकरण से प्रभावित न हो। यह एक अवधारणा ही नही वरन् वर्तमान में क्रियाशील प्रक्रिया भी है। वैश्वीकरण को बढ़ती भूमण्डलीय अंर्तसम्बद्धता के रूप में चित्रित किया जा सकता है। यह कोई परिणाम नही अपितु एक प्रक्रिया है, जो विश्व के विभिन्न भागों में बढ़ती अंर्तसम्बद्धता की ओर झुकान का इशारा करती है, न कि उनके परस्पर जुड़े होने ओर। प्रमुखतः यह सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक, प्रौद्योगिक आदि गुणो का एक विनियम है जो समाजों के मध्य उस समय होता है जब वे परस्पर सम्पर्क में आते है। यद्यपि यह विनियम अतिपूर्व काल से चल रहा है, किन्तु इसे 20 वीं सदी के उत्तरार्ध में वैश्वीकरण नाम दिया गया! कुछ विचारको का मानना है कि यह प्रक्रिया मानव जाति के उत्पन्न होने के समय से ही चल रही है और इसने सभी संस्कृतियों दूरस्थ एवं पृथक को भी, कम या अधिक मात्रा में, प्रभावित किया है। वर्तमान वैश्वीकरण उस प्रक्रिया से अलग है। जिसे अतीत में विनियम की मात्रा एवं अंर्तसम्बद्धता के रूप में देखा जा सकता था।

अर्थशास्त्र, इतिहास, राजनीतिशास्त्र, समाजशास्त्र आदि अनेक ज्ञान की विधाएं वैश्वीकरण को परिभाषित करने के लिए अपने–अपने मानदण्ड अपनाती है। एन्थोनी गिड्डन जैसे समाजशास्त्री ने वैश्वीकरण को परिभाषित करते हुए कहा कि– ''विभिन्न लोगो और दुनिया के विभिन्न क्षेत्रो के मध्य बढ़ती हुई पारस्पारिकता ही वैश्वीकरण है। यह पारस्परिकता सामाजिक और आर्थिक सम्बन्धें में होती है। इसमें समय एवं स्थान सिमट जाते है।'' यूरोपीय कमीशन ने इसे स्पष्ट करते हुए कहा कि – ''यह एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके द्वारा विभिन्न देशो के बाजार और उत्पादन पारस्परिक रूप से एक–दूसरे पर अधिक से अधिक निर्भर रहते है और इस निर्भरता का कारण व्यापार एवं वस्तुओं की गतिशीलता और पूंजी तथा तकनीकी तंत्र का प्रवाहित होना है।'' मेघनाद देसाई के अनुसार ''भूमण्डलीकरण दुनिया भर में विभिन्न अर्थव्यवस्थाओं का बढ़ना, परस्पर अन्योन्याश्रय सम्बन्ध एवं एकीकरण है।'' मैल्कम वाटर्स वैश्वीकरण को एक ऐसी सामाजिक प्रक्रिया मानते है जिसमें सामाजिक एवं सांस्कृतिक व्यवस्थाओं पर भूगोल के अवरोध पीछे हट जाते है और जिसमें लोग उत्तरोत्तर इस बात से भिज्ञ हो जाते है कि ये अवरोध दूर हो जाते है। इनके अनुसार वैश्वीकरण का अर्थ वृहत्तर सुसंबद्धता और सीमाओं को तोड़ना है। डेविड हैण्डरसन नामक अर्थशास्त्री, वैश्वीकरण को एक ऐसे दृष्टांत के रूप में लेते है जिसमें अंर्तराष्ट्रीय रूप से जुड़े हुए बाजार दो शर्तें पूरी करते है– प्रथम–माल, सेवाओं, पूंजी एवं श्रम का निर्बाध संचलन निवेशो और उत्पादनो के लिहाज से एक सकल बाजार के रूप में सामने आता है। द्वितीय–विदेशी निवेशको के साथ–साथ विदेशों में कार्यरत स्वदेशवासियों को भी पूर्ण सम्मान दिया जाता है, जिससे आर्थिक रूप से उन्हे विदेशी नही कहा जाता है।

उपरोक्त विवेचन के आधार पर यह कहा जा सकता है कि वैश्वीकरण एक बहुमुखी, बहुआयामी और वितक्ष्ज्ञण दृश्य धरना है जिसका समकालीन सामाजिक राजनैतिक सांस्कृतिक एवं आर्थिक सम्बन्धें की एक समग्र श्रृंखला पर अपना प्रभाव होता है। इसका प्रभाव सिर्फ आर्थिक है, इसका खण्डन बहुत ही प्रभावी तरीके से किया जाता है।

वैश्वीकरण की प्रमुख विशेषताएं निम्नवत् है।–

1. नवीन सूचना तकनीकी
2. व्यापार एवं वित्त का अंर्तराष्ट्रीयकरण
3. श्रम का वैश्वीकरण
4. बहुसंस्कृतिवाद एवं श्रृजातीय पहचान
5. संस्कृति का समांगीकरण एवं संकरीकरण
6. प्रवसन
7. वैश्विक राष्ट्र–राज्य

आज विश्व के किसी भू–भाग में रहने वाला व्यक्ति अपनी आवश्यकतानुसार अन्य भू–भाग में निवासित व्यक्तियों से सजीव एवं त्वरित सम्पर्क स्थापित करने में सक्षम है। यह सक्षमता नवीन सूचना तकनीकी के कारण सम्भव हो सका है। इण्टरनेट, सैटेलाइट, मोबाइल, टेलीफोन आदि माध्यमों द्वारा वैश्वीकरण को गति मिल पा रही है। ये संचार साधन भौगोलिक, भापयी, प्रजातीय, धार्मिक लैंगिक आदि भेदभावो के कुचक्र को तोड़ कर लोगो को जोड़ने का कार्य कर रहे है। ये संचार तकनीके व्यापार एवं वित्त के लिए भी संयोजक कड़ी का काम कर रही है। नवीन संचार प्रौद्योगिकी के वैश्वीकरण से सम्बन्धें की चर्चा करते हुए मैनुअल केस्टल ने कहा कि– ''प्रौद्योगिकी रूप से मध्यस्थ दशाओं के कारण प्रदत्त समाज में विद्यमान अंतः क्रियाओं की तुलना में विभिन्न प्रकार की अंतः क्रियाओं की सम्भावना बढ़ जाती है।'' वैश्वीकरण ने व्यापार की सीमाओं को समाप्त कर दिया है। इसके परिणाम स्वरूप अंर्तराष्ट्रीय उद्यमों एवं संस्थाओ का जन्म हुआ। जिनका जन्म कहीं होता है, लेकिन इनके कार्यक्षेत्र सम्पूर्ण विश्व में विस्तृत होते है यथा– फोर्ड मोटर्स, मैक्डोनाल्ड रेस्तरां, कोकाकोला, पेप्सी, आदि पेय आदि। व्यापार एवं वित्त अब अनेक अंर्तराष्ट्रीय नियामको एवं नियमों से निर्देशित हो रहे है जैसे– विश्व व्यापार संगठन (W.T.O.) अंर्तराष्ट्रीय

श्रम संगठन (I.L.O.) अंर्तराष्ट्रीय मैद्रिक कोष (I.M.F.) आदि। वैश्वीकरण के परिणाम स्वरूप लाइसेंसिग प्रणाली की समाप्ति हो गयी।

वैश्वीकरण की एक अन्य प्रमुख विशेषता बहुसंस्कृतिवाद है। यह एक ऐसी संकल्पना या दृष्टिकोण है जिसमें अलग–अलग संस्कृतियों को मानने वाले लोग एक राष्ट्र के भीतर शांतिपूर्ण ढंग से परस्पर क्रिया करते हुए रहते है। वर्तमान में कनाडा, इंग्लैण्ड और आस्ट्रेलिया की सरकारी नीति यही है। अनेक संस्कृतियों के लोग साथ–साथ जब रहते है तो इनके मध्य अनेक सांस्कृतिक तत्वों का विनिमय होता है। यह विनियम साहित्य कला, दर्शन, संगीत परिधान एवं याद्य पदार्थो तक विस्तृत होता है। यह विनिमय इन सांस्कृतिक तत्वों को वैश्विक बनाता है। लेविट वैश्वीकरण लोगो के नृजातीय पहचान के लिए खतरा नही है बल्कि उनके नृजातीय पहचान से अन्य लोागो को भी परिचित कराकर उसे भी वैश्विक रूप दे देता है। इसका उदाहरण अनेक व्यंजन, पहनावे, संगीत एवं नृत्य के रूप में उपलब्ध है। थियोडोर लेक्टि से समाजशास्त्री ने वैश्वीकरण की व्याख्या नृजातीयता के प्रसार के सम्बन्ध में किया है। लेविट के अनुसार– एथनिक रूचि के अनुसार भोजन के विभिन्न व्यंजनों, पोशाकों तथा संगीत का विश्व के कोने–कोने में उपलब्ध होना और इनका अन्य नृजातिक व्यक्तियों द्वारा उपयोग किया जाना नृजातीयता का वैश्वीकरण है। चाइनीज व्यंजन, इटालियन पिज्जा, भारतीय करी और इडली–डोसे आदि आजकल विश्व के सभी बड़े शहरो के होटलों में उपलब्ध है।

संस्कृति का समांगीकरण एवं संकरीकरण की वर्तमान स्थिति वैश्वीकरण से अभिप्रेरित है। वर्तमान में पूरे विश्व की कलाओं पर पश्चिमी प्रभावों की छाया तो कमोबेश पश्चिम भी अन्य देशो के साहित्य कला, खान–पान, से प्रभावित है। आज भारत में पश्चिमीकरण तीव्र रूप से गतिशील है तो पश्चिमी देशों एवं अन्य भू–भागो में भारतीय आध्यात्म, योग आदि के प्रभाव स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर है। गिफ्रिन इस सन्दर्भ में कहते है कि वैश्वीकरण के सशक्त समांगीकरण प्रभाव पड़े है जो विद्यमान संस्कृतियों को कमजोर और बरबाद कर इन्हे अमेरिकी आधिपत्य के अंर्तगत एक विश्व संस्कृति की ओर ले जाते है। अमेरिकी जीवन शैली अथवा अधिक सम्भाव्य रूप से इसकी एक धुंधली नकल विश्व की जीवन शैली बन जायेगी।'' इन्होने आगे कहा कि एक इकहरी विश्व संस्कृति का उद्‌गम बहुत असम्भाव्य है। बल्कि वैश्वीकरण एवं सम्बद्ध सांस्कृतिक व्याख्याएं नये प्रस्तार नये संयोजनो नये विकल्पों और नई संस्कृतियों की ओर ले जाने की अधिक सम्भावना रखती है।

अतः स्पष्ट तौर पर यह कहा जा सकता है कि वैश्वीकरण बहुसंस्कृतियो के समांगीकरण एवं संकरीकरण को गति दे रहा है।

वैश्वीकरण की अनेक विशेषताओं में प्रवसन एक है। प्रवसन यद्यपि सदियो से होता रहा है। जिसके लिए अनेक कारक उत्तरदायी रहे है। वैश्विक युग में यह उत्तरोत्तर तीव्र गति से बढ़ा है। आज हमारे ही देश से अमेरिका, अरब, यूरोप एवं अफ्रकीका में रहने वाले लोगो की संख्या बहुत अधिक हो चुकी है।

ये प्रवासी दोहरा योगदान कर रहे है। एक तरह मेजबान देश को सस्ते श्रम उपलब्ध करा रहे है वही दूसरी ओर अपने देश को विदेशी मुद्रा एवं रोजगार के अवसर भी।

वैश्वीकरण ने न सिर्फ आर्थिक, समाजिक क्षेत्र में परिवर्तन लाये है वरत् राजनैतिक संलकल्पनाओं को भी नवीनता दी है। यह इसकी एक विशेषता ही है। आज विश्व को अनेक वैश्विक संगठन संचालित कर रहे है। यथा संयुक्त राष्ट्रसंघ, दक्षेसख् आसियान एमनेस्टी इंटरनैशनल, ग्रीनपीस आदि। वैश्वीकरण ने समस्याओं को भी वैश्विक संदर्भ में देखने की अंर्तदृष्टि दी है और उनका हल भी वैश्विक रूप में ही खोजा जा रहा है। मानवाधिकार श्रम सुधार, पर्यावरण संरक्षण शांति एवं निःशस्त्रीकरण एवं गम्भीर बीमारियों के लिए विश्व की एक जुटता सराहनीय पहल है। अब इबोला या एड्स से लड़ने की जिम्मेदारी सिर्फ प्रभावित देश की ही नही है इसके लिए वैश्विक प्रयास हो रहे है। भूमण्डलीय तापन, ओजोन संरक्षण आदि पर्यावरणीय मुद्‌दे पर विश्व के बड़े–छोटे राष्ट्र साथ–साथ प्रयास कर रहे है। क्षमतानुसार सबकी हिस्सेदारी भी अलग–अगल आवंटित की जा रही है। बिल गेट्स द्वारा शिक्षा एवं स्वास्थ्य हेतु भारत में धन का खर्च किया जाना इसका एक प्रमुख उदाहरण है।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि वैश्वीकरण ने लोगों के जीवन के सभी पक्षो को प्रभावित किया है। भौगोलिक सीमाएं एवं अन्य सभी सीमाओं का उन्मूलन कर समाज को ''बासुधैव कुटुम्बकम्'' की ओर अग्रसर किया है।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. *दोषी.एस.एल. आधुनिकता उत्तरआधुनिकता एवं नव समाजशास्त्रीय सिद्धांत, रावत पब्लिकेशन जयपुर 2002.*
2. *गिड्डेन्स, ए., द कान्सिक्वेन्सेज ऑफ मार्डनिटी, कैम्ब्रिज पाजिटी प्रेस (1991).*
3. *खोर, माटिन रीथिंकिंग ग्लोबलाइजेशन, क्रीटिकल इशूज एण्ड पालिसी चाइसिज, बुक्स कार चेंन्ज, बैंगलोर (2001).*
4. *सिंह, वाई, मार्डनिटी एण्ड सेल्फ आइडेंटिटी, कैम्ब्रिज पाजिटी प्रेस (2002).*
5. *हेजल, हैण्डरसन, बीयान्ड ग्लोबलाइजेशन, शेपिंग ए सस्टेनेबल ग्लोबल इकोनामी, वैस्ट हार्टफोर्ड सीटी कुमारियन (1999).*